THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

अपनी परीक्षाओं में आनन्द मनाओ

Enjoy your exams

Author – Beryl O. Nathans

www.spirituality.com 28-03-2007

मेरी एक दोस्त और मैं उसके कैरियर के लिए उसकी आशाओं तथा योजनाओं पर विचार–विमर्श कर रहे थे। यह इस तथ्य से शुरू हुआ था कि वह अपनी स्कूल की अन्तिम परीक्षाएं देने जा रही थी।

जब हमने अलविदा कहा, तो मैंने साथ ही कहा, "अपनी परीक्षाओं में आनन्द मनाना।" उसने मेरी तरफ अविश्वास से देखा और टिप्पणी की, "उनमें आनन्द मनाऊँ? तुम अपनी परीक्षाओं में आनन्द कैसे मना सकती हो?"

बाद में उसने पूछने के लिए फोन किया, " तुम्हारा क्या मतलब था, परीक्षाओं मे आनन्द मनाना? क्या तुम सचमुच वैसा करती हो?" उसके सवाल ने मुझे अपना एक अनुभव बांटने के लिए प्रेरित किया जो तब हुआ था जब मैं अपनी स्कूल की अन्तिम परीक्षाएं देने जा रही थी।

जब मैं यह समझने के लिए प्रार्थना कर रही थी कि दिव्य मन विद्यमान था तथा यह कि मन का विचार या प्रतिबिम्ब होने के नाते मैं अनन्त ज्ञान से अलग नहीं हो सकती, मेरे पास एक प्रेरित विचार था। मैं हर परीक्षा से पहले निरन्तर व्यवहार में ला पा रही थी कि थोड़ा रुक कर तथा दृढ़ता से घोषित कर सकूँ कि मैं वह नहीं थी जिसे सोचना पड़े क्या लिखना है। मुझे केवल यह सुनने की ज़रूरत थी कि दिव्य मन क्या बता रहा था तथा उसे प्रकट होने देना था।

दिव्य मन ही मेरा मन है, एकमात्र मन जो विद्यमान है।

है, एकमात्र मन जो विद्यमान है। मैंने खामोशी से घोषित किया कि दिव्य मन की अभिव्यक्ति होने के नाते, मैं वह सब कुछ जान पाऊँगी जो मुझे जानने की ज़रूरत थी। बेशक मैंने परीक्षाओं के लिए पढ़ाई की थी, परन्तु उस प्रार्थना ने जिसका मैं वर्णन कर रही थी, मुझे प्रश्नों को समझने में, जो मैंने पढ़ा था उसे याद करने में, तथा निडर और समय सीमाओं के दबाव से मुक्त महसूस करनें में भी मेरी सहायता की। मैं सचमुच परीक्षाओं में आनन्द मना रही थी।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

एक बार जब मैं एक क्रिश्चियन साँयस उपचारक से अपने कैरियर के बारे में बात कर रही थी, हम प्राकृतिक तौर पर परीक्षाओं पर विचार–विमर्श करने लगे। उपचारक ने मुझे बताया उन्होंने एक विश्वविद्यालय के विद्यार्थी से पूछा था उसका परीक्षक कौन था। उस नवयुवक ने कई व्यक्तियों के नाम लिए। उपचारक ने पूछाः "और **परमेश्वर** कहाँ आता है?"

फिर उन्होंने अपने ही प्रश्न का उत्तर यह स्पष्ट करते हुए दियाः " **परमेश्वर** ही एकमात्र परीक्षक है। **परमेश्वर** मानव को परखता है तथा **अपना** ही प्रतिबिम्ब पाता है।" परीक्षाओं के तनाव या चिन्ता या और किसी चीज़ को ऐसे आश्वासनों से मिटाया जा सकता है। केवल **परमेश्वर** ही परखता है, तथा **परमेश्वर** सदा हमारे अन्दर **अपना** सम्पूर्ण प्रतिरूप देखता है। क्या यह हमारे लिए खुद को जानने का मार्ग नहीं है? जितना अधिक मैंनें इस पर विचार किया, उतना अधिक मैंनें इसे सहायक पाया।

*परमेश्वर जो कि एकमात्र **मन** है, हमें अपने प्रतिबिम्ब की तरह जानता है।*

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि **परमेश्वर** जो कि एकमात्र **मन** है, हमें **अपने** प्रतिबिम्ब की तरह जानता है। इसलिए हम में कुछ भी उत्पन्न नहीं होता। हम व्यक्तिगत विचारक तथा कर्त्ता नहीं हैं। **परमेश्वर** के विचार होने के नाते, हम दिव्य **मन** की क्रिया को सही ढंग से कार्यान्वित करने के लिए विद्यमान हैं।

मिसेज़ ऐडी ने इसे मिस्लेनियस राइटिंग्स 1883 – 1896 के अपने " बाइबल लैसन्स" में पूर्णतयाः स्पष्ट रूप से कहा हैः "मानव **परमेश्वर** का रूप तथा प्रतिरूप है; जो कुछ भी **परमेश्वर** के लिए सम्भव है, **परमेश्वर** का प्रतिबिम्ब होने के नाते मानव के लिए सम्भव है " (पृष्ठ 183)।

फिर भी यह किसी भी तरह से पढ़ाई में कर्मठता तथा ईमानदारी की ज़रूरत को खत्म नहीं करता। इन पंक्तियों के साथ हमारा ईमानदारी से किया कार्य हमारे लिए बुद्धिमता, ज्ञान, तथा समझ को अभिव्यक्त करने का एक और रास्ता है। अपनी मेहनत को इस तरह से सोचना खासतौर पर सहायक होता है, अगर परीक्षा के सम्बन्ध में कुछ असाधारण आ जाए।

मेरा एक मित्र इसे साबित कर पाया। वह स्थानीय सरकारी विभाग में कार्य करता था, तथा तरक्की हासिल करने के लिए उसे तीन ज़रूरी विषयों मे परीक्षाएं पास करनी थी। उसने पूरे एक साल के लिए कर्मठता से कार्य किया तथा शाम को एक कॉलेज कोर्स मे हिस्सा लिया।

उसने ईमानदारी तथा कर्मठता से कार्य किया था; उसे दण्डित नहीं किया जा सकता था।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मन, परमेश्वर, नियंत्रण में था तथा उसका निर्देशन कर रहा था, चौथे विषय पर कार्य करना आरम्भ किया। उसने अस्तित्व के वैज्ञानिक कथन को भी याद रखा, जो घोषित करता है, ''सब कुछ अनन्त **मन,** तथा इसका अनन्त प्रकटीकरण है, क्योंकि **परमेश्वर** सर्वेसर्वा है।''

इसलिए उसने समझा कि अनन्त **मन** जो उसने अभिव्यक्त किया था, उसे जो कुछ भी ज़रूरी था, जानने तथा करने के योग्य बना रहा था।

वह इस अनुभूति के साथ बना रहा तथा चारों परीक्षाएँ दी।

चौथे विषय में उसने 100 प्रतिशत प्राप्त किए थे।

अच्छा किया था, परन्तु चौथे विषय में, जिसकी तैयारी के लिए उसके पास बहुत कम समय था, उसने 100 प्रतिशत प्राप्त किए थे!

जो जीसस ने सिखाया था उसे उसने निश्चित रूप से साबित किया : हम स्वंय से कुछ नहीं कर सकते। यह सदा हमारा माता–पिता **परमेश्वर** है, हम में कार्यरत होते हुए तथा कार्यों को करते हुए।

क्योंकि परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है तथा इसलिए **परमेश्वर** के प्रतिबिम्ब के लिए, उसने भी अपनी परीक्षाओं तथा उनके परिणामों मे आनन्द मनाया! जैसा इन उदाहरणों ने दर्शाया, परीक्षाओं में आनन्द मनाना अत्यन्त स्वाभाविक है, कोशिश करो, और तुम पाओगे कि तुम भी यह कर सकते हो!

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.